

कुमार जीवन - 9

अव्यक्त बापदादा (11-03-1971) :-

» _ » व्यक्त में रहते अव्यक्त स्थिति में रहने का अभ्यास अभी सहज हो गया है। जब जहाँ अपनी बुद्धि को लगाना चाहें तो लगा सकें - इसी अभ्यास को बढ़ाने के लिए अपने घर में अथवा भट्टी में आते हो। तो यहाँ के थोड़े समय का अनुभव सदाकाल बनाने का प्रयत्न करना है। जैसे यहाँ भट्टी वा मधुबन में चलते-फिरते अपने को अव्यक्त फरिश्ता समझते हो, वैसे कर्मक्षेत्र वा सर्विस-भूमि पर भी यह अभ्यास अपने साथ ही रखना है। एक बार का किया हुआ अनुभव कहाँ भी याद कर सकते हैं। **तो यहाँ का अनुभव वहाँ भी याद रखने से वा यहाँ की स्थिति में वहाँ भी स्थिति रहने से बुद्धि को आदत पड़ जायेगी।**

» _ » जैसे लौकिक जीवन में न चाहते हुए भी आदत अपनी तरफ खींच लेती है, वैसे ही अव्यक्त स्थिति में स्थित होने की आदत बन जाने के बाद यह आदत स्वतः ही अपनी तरफ खींचेगी। इतना पुरुषार्थ करते हुए कई ऐसी आत्मायें हैं जो अब भी यही कहती हैं कि मेरी आदत हैं। कमजोरी क्यों हैं, क्रोध क्यों किया, कोमल क्यों बने? कहेंगे - मेरी आदत हैं। ऐसे जवाब अभी भी देते हैं। तो ऐसे ही यह स्थिति वा इस अभ्यास की आदत बन जायें, **तो फिर न चाहते हुए भी यह अव्यक्त स्थिति की आदत अपनी तरफ आकर्षित करेगी।** यह आदत आपको अदालत में जाने से बचायेगी। समझा? जब बुरी-बुरी आदतें अपना सकते हो तो क्या यह आदत नहीं डाल सकते हो?

» _ » दो-चार बारी भी कोई बात प्रैक्टिकल में लाई जाती है तो प्रैक्टिकल में लाने से प्रैक्टिस हो जाती है। यहाँ इस भट्टी में अथवा मधुबन में इस अभ्यास को प्रैक्टिकल में लाते हो ना। जब यहाँ प्रैक्टिकल में लाते हो और प्रैक्टिस हो जाती है तो वह प्रैक्टिस की हुई चीज क्या बन जानी चाहिए? नेचुरल और नेचर बन जानी चाहिए। समझा? जैसे कहते हैं ना - यह मेरी नेचर है। **तो यह अभ्यास प्रैक्टिस से नेचुरल और नेचर बन जाना चाहिए। यह स्थिति जब नेचर बन जायेगी फिर क्या होगा? नेचुरल केलेमिटीज़ हो जायेगी।** आपकी नेचर न बनने के कारण यह नेचुरल केलेमिटीज़ रुकी हुई हैं।

» _ » क्योंकि अगर सामना करने वाले अपने **स्व-स्थिति से उन परिस्थितियों को पार नहीं कर सकेंगे तो फिर वह परिस्थितियाँ आयेंगी कैसे।** सामना करने वाले अभी तैयार नहीं है, इसलिए यह पर्दा खुलने में देरी पड़ रही है।

» _ » अभी तक इन पुरानी आदतों से, पुराने संस्कारों से, पुरानी बातों से, पुरानी दुनिया से, पुरानी देह के सम्बन्धियों से वैराग्य नहीं हुआ है। कहाँ भी जाना होता है तो जिन चीजों को छोड़ना होता है उनसे पीठ करनी होती है। तो अभी पीठ करना नहीं आता है। एक तो पीठ नहीं करते हो, दूसरा जो साधन मिलता है उसकी पीठ नहीं करते हो। सीता और रावण का खिलौना देखा है ना। रावण के तरफ सीता क्या करती है? पीठ करती है ना। **अगर पीठ कर दिया तो सहज ही उनके आकर्षण से बच जायेंगे।** लेकिन पीठ नहीं करते हो। जैसे श्मशान में जब नजदीक पहुँचते हैं तो पैर इस तरफ और मुँह उस तरफ करते हैं ना। तो यह भी पीठ करना नहीं आता है। फिर मुँह उस तरफ कर लेते हैं, इसलिए आकर्षण में कहाँ फँस जाते हैं। तो दोनों ही प्रकार की पीठ करने नहीं आता है।

» _ » माया बहुत आकर्षण करने के रूप रचती है। इसलिए न चाहते हुए भी पीठ करने के बजाय आकर्षण में आ जाते हैं। उसी आकर्षण में पुरुषार्थ को भूल, आगे बढ़ने

को भूल रूक भी जाते हैं, तो क्या होगा? मंजिल पर पहुँचने में देरी हो जायेगी। कुमारों की भट्टी है ना। तो कुमारों को यह खिलौना सामने रखना चाहिए। माया की तरफ मुँह कर लेते हैं। **माया की तरफ मुँह करने से जो परीक्षायेँ माया की तरफ से आती हैं, उनका सामना नहीं कर सकते हैं।** अगर उस तरफ मुँह न करो तो माया की परिस्थितियों को मुँह दे सको अर्थात् सामना कर सको। समझा?

➤➤ आदत कैसे बनती है ?

- ➤➤ बार बार कर्म में लाने से
- ➤➤ बार बार वर्णन करने से
- ➤➤ बार बार Visualise करने से
 - ➤➤ नयी नयी कल्पनाएँ करने से
- ➤➤ आदत 3 बातों पर मुख्य रूप से निर्भर करती है
 - ➤➤ स्थान
 - ➤➤ समय
 - ➤➤ Trigger (Stimulus)
- ➤➤ किसी भी तरह की आदत बन सकती बार बार रिपीट करने से
 - ➤➤ कंजूसी की आदत
 - ➤➤ संशय करने की आदत
 - ➤➤ अनुमान लगाने की आदत
 - मन बहुत सारी चीज़ें Project करने लगता है
 - इसमें मन को Pseudo Proof मिलने शुरू हो जाते हैं
 - मन खुद के ही बुने हुए जाल में फंस जाता है
 - इंसान खुद के ही रचे हुए एक Virtual World में चला जाता है
 - ➤➤ वहम करने की आदत
 - स्वयं के प्रति शक वहम है
 - इस आदत से इंसान ऊपर से normal होता है
 - पर अन्दर से शक्तिहीन होता है
 - ➤➤ शक करने की आदत
 - दूसरों के प्रति वहम शक है
 - ➤➤ दुखी होने की आदत
 - ➤➤ बेहोशी में जाने की आदत
 - छोटे छोटे कर्म में भी स्वयं को बार बार होश में लाने की आदत

डालिए
